|  |
| --- |
| 27. April 2025 |
| **2. Sonntag der Osterzeit C** | Sonntag der göttlichen Barmherzigkeit |
| Weißer Sonntag  |
| Erste Lesung: Apg 5, 12-16; Zweite Lesung: Off 1, 9-11a.12-13.17-19; Evangelium: Joh 20, 19-31 |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 329 | Das ist der Tag |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 758 | Lobsing, erlöste Christenschar |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 118, 2 u. 4. 24-15. 22-24 u. 28 |  |
|  | Kehrvers: GL 444 | Danket dem Herrn |
|  | GL 326, 1+2 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Weil du mich gesehen hast, Thomas, glaubst du.* |
|  | *Selig sind, die nicht sehen und doch glauben.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 759 | Der Glaube ist nun fest |
|  | GL 760 / 761 | Wahrer Gott |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 322, 7-11 | Den Jüngern war das Herz |
|  | GL 337, 1+3+4+7 | Freu dich, erlöste Christenheit |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 1+4! | Gottheit, tief verborgen |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 331, 1+2+4! +6 | Ist das der Leib |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 525, 1-4 | Freu dich, du Himmelskönigin |